अतिरिक्त भाग

मत्ती में मसीह के सोलह दृष्टांत*	
बोने वाला	13:1–9, 18–23
जंगली बीज	13:24–30, 36–43
राई का बीज	13:31, 32
खमीर	13:33
छिपा हुआ खजाना	13:44
अनमोल मोती	13:45, 46
जाल	13:47–50
गृहस्थ	13:51, 52
निर्दयी सेवक	18:23–35
दाख की बारी में मज़दूर	20:1–16
दो पुत्र	21:28–32
गृहस्वामी और दाख की बारी	21:33–41
राजा के पुत्र का विवाह	22:2–14
दस कुंवारियां	25:1–13
तोड़े	25:14–30
भेड़ों और बकरियों को अलग करने वाला चरवाहा	25:31–46
*अन्य ''दृष्टांत'' उदाहरणों या पहेलियों वाली कहावतें हैं: 7:24–27; 9:15, 16, 17; 11:16, 17; 12:29, 43–45; 15:10–20; 24:32–35, 36–41, 42–44, 45–51.	

मत्ती में पूरी हुई पुराने नियम की भविष्यवाणियां

1:22, 23	''देखो, एक कुंवारी गर्भवती होगी ...'' (देखें यशायाह 7:14)।
2:5, 6	'' '... क्योंकि [बैतलहम] में से एक अधिपति निकलेगा ...' '' (देखें मीका 5:2)।
2:15	''मैंने अपने पुत्र को मिस्र से बुलाया'' (देखें होशे 11:1)।
2:17, 18	''रामाह में एक करुण-नाद सुनाई दिया ...'' (देखें यिर्मयाह 31:15)।
2:23	''वह नासरी कहलाएगा।''*
3:3	''जंगल में एक पुकारने वाले का शब्द ...'' (देखें यशायाह 40:3)।
4:14-16	''... अन्यजातियों का गलील ... बड़ी ज्योति देखी ...'' (देखें यशायाह 9:1, 2)।
8:17	''उसने आप हमारी दुर्बलताओं को ले लिया और हमारी बीमारियों को उठा लिया'' (देखें यशायाह 53:4)।
10:35, 36	'' 'मैं तो आया हूं कि मनुष्य को उसके पिता से और बेटी को उसकी मां से ... अलग करूं ...' '' (देखें मीका 7:6)।
11:4, 5	'' '... अंधे देखते हैं और लंगड़े चलते फिरते हैं, ... और कंगालों को सुसमाचार सुनाया जाता है' '' (देखें यशायाह 29:18, 19; 35:5, 6; 61:1)।
11:10	'' 'देख, मैं अपने दूत को तेरे आगे भेजता हूं ...' '' (देखें मलाकी 3:1)।
11:29	'' 'तुम अपने मन में विश्राम पाओगे' '' (देखें यिर्मयाह 6:16)।
12:17-21	''... मैं अपना आत्मा [अपने सेवक] पर डालूंगा ...'' (देखें यशायाह 42:1-4)।
13:14, 15	'' 'तुम कानों से तो सुनोगे, पर समझोगे नहीं ...' '' (देखें यशायाह 6:9, 10)।
13:35	''मैं दृष्टांत कहने को अपना मुंह खोलूंगा ...'' (देखें भजन संहिता 78:2)।
15:7-9	'' 'ये लोग होठों से तो मेरा आदर करते हैं, पर उनका मन मुझ से दूर रहता है ...' '' (देखें यशायाह 29:13)।
21:4, 5	''... देख, तेरा राजा तेरे पास आता है; ... और गदहे पर बैठा है ...'' (देखें जकर्याह 9:9)।
21:9	'' 'धन्य है वह जो प्रभु के नाम से आता है' '' (देखें भजन संहिता 118:26)।
21:13	'' ' ''मेरा घर प्रार्थना का घर कहलाएगा''; परन्तु तुम उसे डाकुओं की खोह बनाते हो' '' (देखें यशायाह 56:7; यिर्मयाह 7:11)।
21:16	'' 'दूध पीते बच्चों के मुंह से ... तू ने अपार स्तुति कराई' '' (देखें भजन संहिता 8:2)।
21:42	'' 'जिस पत्थर को राज मिस्त्रियों ने निकम्मा ठहराया था, वही कोने के सिरे का पत्थर हो गया ...' '' (देखें भजन संहिता 118:22, 23)।
26:31	'' 'मैं चरवाहे को मारूंगा और झुंड की भेड़ें तितर-बितर हो जाएंगी' '' (देखें जकर्याह 13:7)।
27:9, 10	''उन्होंने वे तीस सिक्के अर्थात उस ठहराए हुए मूल्य को ले लिया, और ... उन्हें कुम्हार के खेत से मूल्य में दे दिया'' (देखें जकर्याह 11:12, 13; यिर्मयाह 19:1-13; 32:6-9)।

*पुराने नियम के किसी हवाले में यह विशिष्ट भविष्यवाणी नहीं मिलती (2:23 पर टिप्पणियां देखें)।